वर्ष 7, अंक 10

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

जून-जुलाई 2024 ₹ 65

ज़िन्दगी का बायस्कोप

सिनेमा पहाड़ों का ...

ISSN : 2456-3838
Licence No. F2 (P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष 7 अंक 10, जून-जुलाई, 2024
(मासिक/द्विभाषिक हिंदी-अंग्रेजी)

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन : शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, गली नंबर 2,
प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1
दिल्ली-110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

आप डिजिटल संस्करण को नॉटनल (www.notnul.com) से ख़रीद सकते हैं।

संपर्क : 9313677771
ईमेल : pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति तथा लेखक-प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(सभी चित्र इंटरनेट से साभार)
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

04 संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी : ऊंचाई का सिनेमा
06 अरविन्द कुमार :‘चाइना टाउन’ में था ‘कालीचरण’ और ‘डॉन’ का पूर्वाभास!

कवर स्टोरी: सिनेमा पहाड़ों का
09 मनमोहन चड्ढा : कैमरे में कंचनजंगा
12 दीप भट्ट : ये वादियां ये फिजाएं बुला रही हैं...
20 पहाड़ों पर शूटिंग की दुश्वारियां
21 डॉ. इंद्रजीत सिंह : कितनी खूबसूरत ये कश्मीर है...
23 इक़बाल रिज़वी : सिनेमा इन शिमला
25 गौतम सिद्धार्थ : वो प्यार का मौसम... जब हरी, हरी रुत छाया!
27 जयनारायण प्रसाद : सपनों की रानी... दार्जिलिंग
32 महेश भट्ट : वादियां मेरा दामन, रास्ते मेरा दामन
34. Locations Forever For Cinemas
36 डॉ. मनीष जैसल : सिनेमा की रश्मि रेखा

दस्तावेज : ख्वाजा अहमद अब्बास
44 ज़ाहिद ख़ान : मेरी ज़िन्दगी का पहला मोड़

चलचित्र की अचल यादें
46 दिनेश चौधरी : ‘शोले’ के बनने की कहानी

पुस्तक प्लस
49 विजय पाडलकर :अनकहे किस्सों की यादगार दास्तान
51 विनोद तिवारी : फिल्म पत्रकारिता-15: फिल्म समीक्षा कैसे करें?
53 जयनारायण प्रसाद : ‘द शेमलेस’ फेम एक्ट्रेस
55 **Global Screen :**
How A.I. is reshaping the way movies are made
58 **शुभ समाचार :** ढाई आखर’ एक प्रेम गीत है

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं. 2, प्रताप नगर मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक-संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ/439/ नारायणा विलेज, नई दिल्ली-110026 से मुद्रित।

ऊंचाई का सिनेमा

मित्रो, जून-जुलाई का महीना आमतौर पर तपिश से दूर कहीं वादियों, घाटियों में घूमने का मौसम लेकर आता है। हममें से ज्यादातर लोग अपनी-अपनी क्षमता के मुताबिक सैर-सपाटे के लिए देश के पर्वतीय क्षेत्रों में जाते हैं और जब लौट कर आते हैं तो एक नई ताजगी और ऊर्जा से लैस होते हैं। तब उन्हें समझ आती है प्रकृति और पर्यावरण की अहमियत। ज़िन्दगी जीने हौसला जैसे दोगुना हो जाता है। पिक्चर प्लस का यह अंक इसी मकसद से 'सिनेमा पहाड़ों का...' विषय पर केंद्रित किया गया है। ताकि जब आपके हाथों में यह पत्रिका मिले तो पल भर को आप भी खुद को उसी प्रकृति और पर्यावरण के सान्निध्य में पाएं और तपिश से तराशे हुए समय में थोड़ा-सा सुकून हासिल कर सकें। क्योंकि पिक्चर प्लस ज़िन्दगी का बायस्कोप है तो सोसायिटी का सेल्युलॉयड और समय की धड़कन भी।

इस अंक को बनाने के समय मुझे राजकपूर की सन् 1949 की फिल्म बरसात के दो-एक गानों की याद आती है जिसकी शूटिंग कश्मीर की घाटी में की गई थी। माना जाता है किसी हिंदी फिल्म के लिए तब पहली बार कश्मीर में शूटिंग हुई थी। रामानंद सागर उस फिल्म के लेखक तो संभव है उनकी सलाह सर्वोपरि रही होगी। इसी के साथ मुझे बेमिसाल फिल्म का एक गाना याद आता है- ए री पवन, ढूंढ़े किसे तेरा मन...। यहां 'ए री' को समझना बहुत आवश्यक है। 'ए री पवन' हवा से संबोधित है तो 'एरी पवन' का आशय पर्वतीय बयार से भी है। मंतव्य का यह मिलन अनोखा है।

मित्रो, पत्रिका में इस विषय से संबंधित गणमान्य लेखकों की अपनी-अपनी यादें और टीका-टिप्पणियां हैं। इनसे गुजरते हुए आप निश्चय ही मेरी ही तरह नॉस्टेल्जिक हो जाएंगे और अपने भीतर विचारों की नई उजास भी महसूस कर सकेंगे। कई सारी फिल्मों, उनके दृश्यों और अनेक गानों की याद आएगी। लेकिन मुझे इस वक्त साल 2022 में आई राजश्री प्रोडक्शन के सूरज बड़जात्या की एक मल्टीस्टारर फिल्म ऊंचाई की याद आ रही है। हममें से बहुत से फिल्मप्रेमियों को भी यह फिल्म जरूर याद होगी। इस फिल्म में अमिताभ बच्चन, अनुपम खेर, बोमन ईरानी, परिणीति चोपड़ा, नीना गुप्ता, नफीसा अली, सारिका और डैनी डेन्जोंगपा जैसे कलाकार थे। राजश्री प्रोडक्शन की किसी फिल्म में अमिताभ बच्चन करीब पचास साल बाद नजर आए थे। यह असहज भी नहीं था। क्योंकि राजश्री प्रोडक्शन जिस मिजाज की फिल्मों के लिए जाना जाता रहा है, उस दौर में अमिताभ बच्चन के किरदार उसके मुकाबले अपने अलग तेवर के लिए विख्यात रहे हैं। खुद सूरज बड़जात्या ने फिल्म रिलीज के वक्त कहा था कि- सत्तर-अस्सी के दशक में हम ऐसी फिल्में बनाते थे, जिसमें नॉन-स्टार कास्ट होते थे। नए और युवा चेहरे लेते थे। हम एक्शन नहीं बल्कि पारिवारिक फिल्में बनाते थे। जबकि बच्चन जी की छवि एक एक्शन हीरो की थी। इसलिए हम 1973 की सौदागर के बाद किसी दूसरी फिल्म में साथ-साथ नहीं आ सके।

फिल्म का यह तथ्य अलग महत्व का है। लेकिन ऊंचाई जिस आशय के लिए रेखांकित की जानी चाहिए, उस पहलू पर विचार कम ही हुआ। ऊंचाई चार ऐसे बुजुर्गों की कहानी है, जिनमें युवाओं की तरह जोश और जिंदादिली है। नेपाल में पैदा हुए भूपेन (डैनी डेन्जोंगपा) का सपना है कि वह अपने दोस्त अमित (अमिताभ बच्चन), ओम (अनुपम खेर) और जावेद (बोमन ईरानी) के साथ एवरेस्ट पर चढ़े। लेकिन इस उम्र में पहाड़ पर चढ़ना आसान नहीं। कहानी में मोड़ तब आता है जब भूपेन का देहांत हो जाता है। ऐसे में दोस्त का सपना साकार करने के लिए बाकी तीनों एवरेस्ट बेस कैंप ट्रेक पर जाने का फैसला करते हैं। यह फैसला जुनूनी था। जज्बाती था। लेकिन तमाम दुश्वारियों के बावजूद तीनों दोस्त

ऊंचाई पर चढ़ते हैं और उसी ऊंचाई से अपने दोस्त की अस्थि विसर्जित करते हैं। यह सफलता विस्मयकारी है।

ऊंचाई फिल्म का यह आख्यान अभिधा स्वरूप में हमें कितना प्रभावित कर सकने में सक्षम है, ये तो हम नहीं जानते लेकिन इसकी व्यंजना का विस्तार इसके प्राकृतिक स्वरूप में है। इस फिल्म की शूटिंग नेपाल के विभिन्न स्थानों पर की गई थी, जैसे कि लुक्ला और काठमांडू। इसके अलावा इस शूटिंग कारगिल में भी की गई। यों कारगिल की कहानी कई और फिल्मों में भी दिखाई जा चुकी है। जिसमें दो देशों की जंग का फिल्मांकन हुआ। लेकिन ऊंचाई जिंदगी और प्रकृति की जंग की कहानी थी। फिल्म में पर्वतीय शृंखलाओं, बर्फीली चोटियों का अद्भुत नयनाभिराम और चमत्कारी नजारा देखने को मिलता है। यों सिनेमा में पहाड़ों या हिल स्टेशन्स का चित्रण खूब हुआ है। फिल्मों के माध्यम से ही जन-जन तक इन हिल स्टेशनों के बारे में लोगों को जानकारी मिलीं और लोग इस जून-जुलाई के तपिश भरे मौसम में यहां घूमने निकले।

लेकिन आज एआई का दौर आ चुका है। सिनेमा में एआई समाविष्ट हो चुका है। ये वर्चुअल तकनीक एक नई चुनौती भी है। हम स्टूडियो में ही ऊंटी के वनांचल तो कश्मीर, लद्दाख की घाटियों को दर्शा ले रहे हैं। इसे वीएफएक्स की श्रेणी में तो रखा जा सकता है लेकिन क्या इसे भी हम वास्तविक तौर पर 'सिनेमा पहाड़ों का...' कह सकते हैं? शायद नहीं। कोई हैरत नहीं, आज कई फिल्मों में एआई तकनीक से बाग, बगीचे, पर्वत, नदी, झील, झरने दिखाए जा रहे हैं लेकिन क्या ये पहले जैसे प्रभावोत्पादक रह गए? हालांकि ये सिलसिला चल चुका है तो अपने अंजाम कर जारी रहेगा। लेकिन सूरज बड़जात्या की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। उन्होंने पहाड़ों, ग्लेशियरों को दर्शाने के लिए वर्चुअल तकनीक का सहारा नहीं लिया। अपने कैमरे में उचित लोकेशन पर वास्तविक दृश्यों को कैद किए। हालांकि हाल के सालों में कई प्रदेश की सरकारों ने अपने अपने राज्यों की भौगोलिक, सांस्कृतिक और मनोहारी लोकेशनों के प्रचार प्रसार के लिए फिल्म नीतियां बनाई हैं, यह सराहनीय है। फिल्मकारों को इसका लाभ उठाना चाहिए। सिनेमा जितना स्थानीयता से जुड़ा होगा, वह उतना ही प्रभावशाली होगा।

मित्रो, यह अंक कैसा लगा, हमारा मार्गदर्शन कीजिएगा। अब हम जुटते हैं अगले अंक की तैयारी में। हमारा अगस्त अंक सिनेमा में क्रिएटिव फ्रीडम विषय पर केंद्रित है। अगस्त और आजादी अपने आप में जुड़े दो शब्द भर नहीं हैं बल्कि हर आयाम में उड़ान का व्याख्यान समेटे हुए है। आप सिनेमा में किस तरह की क्रिएटिविटी की आजादी चाहते हैं, इस पर आप भी अपनी टिप्पणियां भेज सकते हैं।

आपका संपादक

संजीव श्रीवास्तव

'चाइना टाउन' में था 'कालीचरण' और 'डॉन' का पूर्वाभास!

अरविंद कुमार

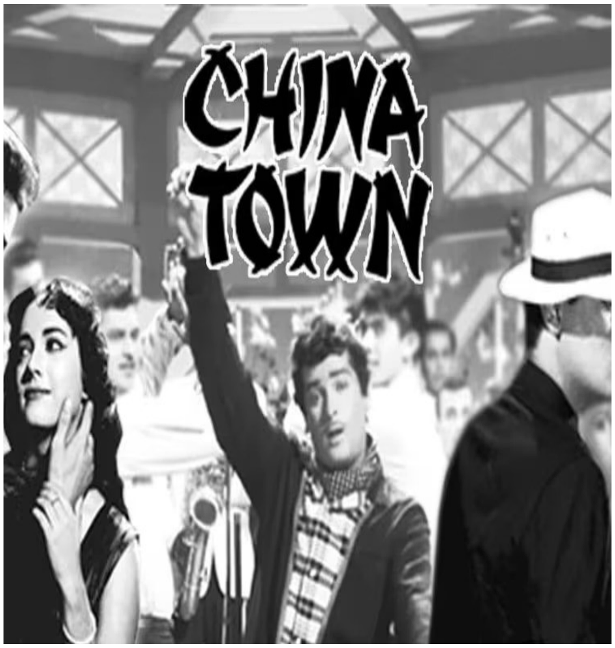

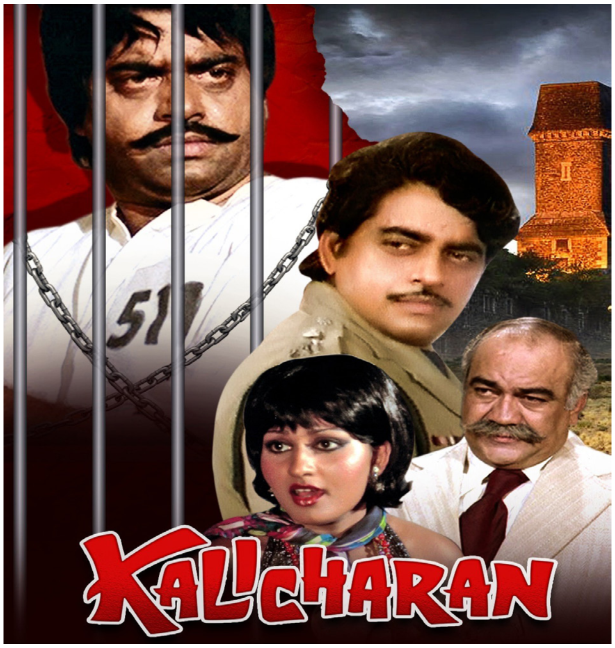

सन् 1964-शक्ति से मेरी पहली मुलाक़ात हुई चंद्रशेखर के घर। तब वह शर्मिला टैगोर की पहली हिंदी फ़िल्म 'कश्मीर की कली' बना रहे थे। शक्ति में जो सौजन्य, संजीदगी, सहजता और सादगी नज़र आई, मुझे वह अच्छी लगी। पता नहीं मैं उन्हें कैसा लगा। हम दोनों के बीच आपसी समझ का रिश्ता बन गया।

राजेश खन्ना के साथ 'आराधना' में शर्मिला को किशोर अवस्था से बुढ़ापे तक ले जाने से पहले वह शर्मिला के साथ मनोज कुमार की 'सावन की घटा' (1966) और शम्मी कपूर के साथ 'ऐन ईवनिंग इन पेरिस' बना चुके थे। 'आराधना' न केवल शक्ति सामंत, बल्कि राजेश खन्ना और शर्मिला के फ़िल्मी सफ़र में नया मोड़ लाने वाली फ़िल्म साबित होने वाली थी।

'आराधना' किशोरी वंदना शर्मिला दार्जीलिंग जाने वाली ट्रेन में सवार है। साथ-साथ सड़क पर जीप में जा रहा वायुसेना का पाइलट अरुण (राजेश खन्ना) उसे छेड़ रहा है गा कर 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू'। आखें मिलती हैं। संयोगवश अरुण अपने को पाइलट मदन (सुजित) को दिखाने जिन वैद्य जी के पास जाता है उन्हीं की बेटी है वंदना। शीघ्र ही दोनों का प्रेम होता है। एक दिन मंदिर में विवाह कर लेते हैं। वंदना से अपने विवाह की बात करने अरुण अपने घर जाने का वादा करता है। लेकिन अरुण के विमान में दुर्घटनाग्रस्त होने की ख़बर लाता है मदन। वंदना का सपना और जीवन भी धराशायी हो जाते हैं। वह मां बनती है, किसी की सलाह पर इस आशा से बच्चे को अनाथालय में छोड़ आती है कि अगले दिन उसे गोद ले जाएगी, पर उस से पहले कोई और बच्चे को गोद ले चुका है। वह उससे विनती करती है, पर होता यह है कि वह बेटे सूरज की आया बन कर रहने लगती है। बच्चा बढ़ रहा है, स्कूल जाता है। एक दिन स्कूल से लौटा तो देखा कि एक अंकल 'मां' (वंदना) पर बलात्कार की कोशिश कर रहे हैं। सूरज के हाथों अंकल की हत्या हो जाती है। इलजाम वंदना अपने सर ले लेती है।

बारह साल बाद जेल से छूटती है तो उस परिवार का पता नहीं मिलता जहां वह सूरज को पाल रही थी। अब? दयालु और भलामानस रिटायर होने वाला विधुर जेलर उसे बहन बना कर ले आया। वंदना को उस की बेटी रेणु अपनी ही संतान लगती है। और एक दिन रेणु का मंगेतर आता है बड़ी आनबान से